# नातेदारी का महत्व
# (Importance of Kinship)

हिन्दुओं में नातेदारी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करती है, इसके महत्व को जीवन में विभिन्न सामाजिक-सांस्कृतिक धार्मिक संस्कारों में सामाजिक समारोहों में और कष्टप्रद परिस्थितियों में देखा जा सकता है। किसी भी समाज के संरचना व व्यक्ति के पारिवारिक संबंधों को नातेदारी व्यवस्था के माध्यम से जाना जा सकता है। व्यक्ति के वंश, उत्तराधिकार, प्रस्थिति आदि नातेदारी से निर्धारित होता है। नातेदारी के महत्व को निम्नलिखित ढंग से समझा जा सकता है:—

(1) प्रस्थिति निर्धारण (Status Determination):— प्रत्येक समाज में व्यक्ति की प्रस्थिति का निर्धारण बहुत कुछ उसके नातेदारों के आधार पर किया जाता है। नातेदारी के सहायता से किसी के वंश के इतिहास को जाना जा सकता है। साथ ही इसके माध्यम से नातेदारों की संख्या का पता चलता है। नातेदारों की संख्या के माध्यम से एक विशेष वंश व कुल-खानदान की शक्ति का पता चलता है, जिसके एक व्यक्ति की प्रस्थिति निर्धारित होती है। कुछ परम्परागत समाजों में तो नातेदारी का वृहत रूप एक प्रतिष्ठा का द्योतक माना जाता है।

(2) परिवार और विवाह का आधार (Basis of family and Marriage):— मार्गन ने परिवार और विवाह व्यवस्था की उत्पत्ति एवं विकास की जानकारी के लिए नातेदारी शब्दावली को आधार के रूप में माना है। नातेदारी पद व्यक्तियों में निकटता एवं दूरी का आभास कराते हैं। लड़के या लड़की के विवाह के लिए जीवन-साथी का चुनाव में नातेदारों की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। साथ ही परिवार नातेदारी संबंधों की वृहत व्यवस्था का एक अभिन्न अंग होता है। परिवारों के सदस्यों के बीच के सामाजिक संबंध नातेदारी दायित्वों पर आधारित होते है।

③ मानसिक संतुष्टि (Mental Satisfaction):- नातेदारी की आवश्यकता मानसिक रूप से संतुष्टि प्रदान करती है। न केवल सरल व ग्रामीण समाजों में, बल्कि आधुनिक नगरीय समाजों में भी इस प्रकार की प्रवृत्ति लोगों में पाई जाती है। नगर में प्रवासी लोग अपने आवास स्थलों की निकटता में अपने को अधिक संतुष्ट एवं सुरक्षित महसूस करते हैं।

④ असीमित उत्तरदायित्व (Unlimited Responsibility):- सामाजिक जीवन में नातेदारी समूह की भूमिका ऐसी होती है जिसमें प्रायः सभी व्यक्ति एक-दूसरे के प्रति असीमित उत्तरदायित्वों का निर्वाह करते हैं। इससे एक तरफ नातेदारों का भला होता है, तो दूसरी तरफ नातेदारी समूहों में व्यक्ति भूमिका-निर्वाह और अनेक तरह के उत्तरदायित्वों का प्रशिक्षण प्राप्त करता है। नातेदारी में व्यक्ति एक दूसरे की सहायता एवं उसके हितों की रक्षा करते हैं।

⑤ सामाजिक सुरक्षा (Social security):- नातेदारी समूह व्यक्ति को सामाजिक सुरक्षा प्रदान करता है। इसका पता तब चलता है जब कोई व्यक्ति संकट की स्थिति में होता है, तो दूसरी तरफ नातेदारी समूहों में व्यक्ति एक दूसरे की सहायता एवं उसके हितों की रक्षा करते हैं। जब व्यक्ति संकट की स्थिति में होता है, तब नातेदारों के द्वारा सुरक्षा व सुविधाएँ प्रदान की जाती है। नातेदारी समूह के कारण व्यक्ति अकेला व असहाय महसूस नहीं करता है।

⑥ सामाजिक संगठन में सुदृढ़ता (Solidarity in Social organization):- नातेदारी व्यवस्था सामाजिक संगठन को सुदृढ़ बनाता है। नातेदारी व्यवस्था एवं सामाजिक संगठन में गहरा संबंध है।